

रविवार 16 मार्च, 2025

विषय— पदार्थ

स्वर्ण पाठ: 2 राजा 25: 30

"और प्रतिदिन के खर्च के लिये राजा के यहां से नित्य का खर्च ठहराया गया जो उसके जीवन भर लगातार उसे मिलता रहा।"

उत्तरदायी अध्ययन: 2 पतरस 1: 2, 4, 11
नीतिवचन 8: 17-21

- 2 परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।
- 4 जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।
- 11 वरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।
- 17 जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन से मैं भी प्रेम रखती हूं, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठ कर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।
- 18 धन और प्रतिष्ठा मेरे पास है, वरन ठहरने वाला धन और धर्म भी हैं।
- 19 मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है।
- 20 मैं धर्म की बाट में, और न्याय की डगरों के बीच में चलती हूं,
- 21 जिस से मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूं, और उनके भण्डारों को भर दूं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 36: 7-9

- 7 हे परमेश्वर तेरी करुणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।
- 8 वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।
- 9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे॥

2. 1 राजा 18: 1, 2, 41-45 (से 1st.)

- 1 बहुत दिनों के बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा, कि जा कर अपने अपप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा।
- 2 तब एलिय्याह अपने आप को अहाब को दिखाने गया। उस समय शोमरोन में अकाल भारी था।
- 41 फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, उठ कर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।
- 42 तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनों के बीच किया।
- 43 और उसने अपने सेवक से कहा, चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर देख, तब उसने चढ़ कर देखा और लौट कर कहा, कुछ नहीं दीखता। एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा।
- 44 सातवीं बार उसने कहा, देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है। एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जा कर कह, कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।
- 45 थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार हो कर यिज़्रेल को चला।

3. 2 राजा 4: 1-7

- 1 भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए।
- 2 एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उसने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल को छोड़ और कुछ तहीं है।
- 3 उसने कहा, तू बाहर जा कर अपनी सब पड़ोसियों खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना।
- 4 फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द कर के उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना।
- 5 तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई।
- 6 जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उसने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया।

- 7 तब उसने जा कर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। ओर उसने कहा, जा तेल बेच कर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।

4. मत्ती 4: 23

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

5. मत्ती 5: 1, 2

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

6. मत्ती 6: 19-21, 25, 26, 31, 32 (और तुम्हारा), 33

- 19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।
25 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?
26 आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते।
31 इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे?
32 ... और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।
33 इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

7. यूहन्ना 10: 7 (से 1st), 10 (मैं)

- 7 तब यीशु ने उन से फिर कहा।
10 मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं

8. इफिसियों 3: 14-21

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 14 मैं इसी कारण उस पिता के साम्हने घुटने टेकता हूं,
- 15 जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।
- 16 कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ।
- 17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेव डाल कर।
- 18 सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है।
- 19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ॥
- 20 अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है,
- 21 कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 7: 1-2

अनंत पर टिके रहने वालों के लिए आज का दिन आशीर्वाद के साथ बड़ा है।

2. 70: 12-13

दिव्य मन सभी पहचानों को, घास के एक ब्लेड से लेकर एक तारे तक, विशिष्ट और शाश्वत के रूप में रखता है।

3. 530: 5-12

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के द्वारा कायम है, होने का दिव्य सिद्धांत। परमेश्वर के आदेश पर पृथ्वी, मनुष्य के उपयोग के लिए भोजन लाती है। यह जानकर, यीशु ने एक बार कहा था, "से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे?" — अपने निर्माता के विशेषाधिकार पर नहीं मानते हुए, लेकिन सभी के पिता और माता को पहचान कर, जो मनुष्य को खिलाने और कपड़े पहनने में सक्षम है, जैसे वह गेंदे के साथ करता है।

4. 468: 17 (पदार्थ)-24

पदार्थ वह है जो अनादि है और कलह और क्षय से असमर्थ है। सत्य, जीवन और प्रेम पदार्थ हैं, क्योंकि इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग होता है: "विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" आत्मा, मन, आत्मा या ईश्वर का पर्यायवाची एकमात्र वास्तविक पदार्थ है। व्यक्ति सहित आध्यात्मिक ब्रह्माण्ड, एक यौगिक विचार है, वह आत्मा के दिव्य पदार्थ को दर्शाता है।

5. 275: 10-17

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ।

6. 301: 17-29

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे। नश्वर मनुष्य खुद को भौतिक पदार्थ लगता है, जबकि मनुष्य "छवि" (विचार) है। भ्रम, पाप, बीमारी और मृत्यु भौतिक अर्थों की झूठी गवाही से उत्पन्न होती है, जो कि अनंत आत्मा की केंद्रीय दूरी के बाहर एक निश्चित दृष्टिकोण से, मन और पदार्थ की एक उलटी छवि प्रस्तुत करता है और सब कुछ उल्टा हो जाता है।

7. 278: 8-19

यह एक झूठा अनुमान है, यह धारणा कि वास्तविक पदार्थ है, आत्मा के विपरीत है। आत्मा, ईश्वर, अनंत है, सब कुछ है। आत्मा का कोई विपरीत नहीं हो सकता।

नश्वर की झूठी मान्यताओं में से एक यह है कि सामग्री पर्याप्त है या जीवन और संवेदना है, और केवल एक समरूप नश्वर चेतना में मौजूद है। इसलिए, जैसा कि हम आत्मा और सत्य से संपर्क करते हैं, हम पदार्थ की चेतना खो देते हैं। यह मानते हुए कि भौतिक पदार्थ हो सकता है, एक और प्रवेश की आवश्यकता है, - अर्थात्, आत्मा अनंत नहीं है और यह मामला आत्म-रचनात्मक, आत्म-अस्तित्व और शाश्वत है।

8. 281: 3 (आत्मा)-4

आत्मा अनंत और सर्वोच्च है।

9. 60: 29-2

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते।

10. 2: 5 (यह)-11

... जो इच्छा धार्मिकता की भूख की ओर ले जाती है, वह हमारे पिता का आशीर्वाद है, और यह हमारे पास व्यर्थ नहीं लौटती।

ईश्वर स्तुति की सांस से प्रेरित होकर उससे अधिक कुछ नहीं कर सकता जो उसने पहले ही कर दिया है, और न ही अनंत सब कुछ अच्छा करने से कम कर सकता है, क्योंकि वह अपरिवर्तनीय ज्ञान और प्रेम है।

11. 15: 25-30

ईसाई गुप्त सौंदर्य और आनन्द में आनन्दित होते हैं, जो दुनिया से छिपे हैं, लेकिन भगवान उन्हें जानता है। आत्म-विस्मृति, पवित्रता और स्नेह निरंतर प्रार्थना है। पेशा नहीं, अभ्यास विश्वास नहीं समझ, सर्वशक्तिमान के कान और नेक हाथ और वे निश्चय ही असीम आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

12. 234: 4-8

जो कुछ भी ज्ञान, सत्य, या प्रेम से प्रेरित होता है - चाहे वह गीत हो, उपदेश हो, या विज्ञान हो - मानव परिवार को मसीह की मेज से आराम के टुकड़ों का आशीर्वाद देता है, भूखे को खाना खिलाता है और प्यासे को जीवित जल देता है।

13. 516: 4-8, 9 (ज़िंदगी)-21

पदार्थ, जीवन, बुद्धि, सत्य और प्रेम, जो देवता का निर्माण करते हैं, उनकी रचना से परिलक्षित होते हैं; और जब हम विज्ञान के तथ्यों के प्रति कॉर्पोरेल इंद्रियों की झूठी गवाही देते हैं, तो हम इस वास्तविक समानता और प्रतिबिंब को हर जगह देखेंगे।

जीवन अस्तित्व में परिलक्षित होता है, सत्यता में सत्य, अच्छाई में ईश्वर, जो अपनी शांति और स्थायित्व प्रदान करता है। निःस्वार्थ भाव से प्यार, सुंदरता और रोशनी में नहाया हुआ। हमारे पैरों के नीचे की घास चुपचाप बहती है, "नम्र पृथ्वी का वारिस होगा।" मामूली अर्बेटस उसकी प्यारी साँस को स्वर्ग भेज देता है। महान चट्टान छाया और आश्रय देती है। चर्च-गुंबद से सूरज की रोशनी, जेल-सेल में झलकती है, बीमार-कक्ष

में घूमती है, फूल को रोशन करती है, परिदृश्य को सुशोभित करती है, पृथ्वी को आशीर्वाद देती है। मनुष्य, उसकी समानता में बना, उसके पास सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाता है।

14. 206: 15-18

मनुष्य के साथ भगवान के वैज्ञानिक संबंध में, हम पाते हैं कि जो कुछ भी एक को आशीर्वाद देता है, वह सभी को आशीर्वाद देता है, जैसा कि यीशु ने आत्मा को दिखाया, भौतिक नहीं, आपूर्ति का स्रोत होने के नाते, रोटियों और मछलियों के साथ।

15. 494: 5-19

क्या यह विश्वास करना बेवफाई की प्रजाति नहीं है कि मसीहा के रूप में इतना महान कार्य स्वयं या ईश्वर के लिए किया गया था, जिसे यीशु के उदाहरण से अनन्त सद्भाव को बनाए रखने के लिए किसी सहायता की आवश्यकता नहीं थी? लेकिन नश्वर लोगों को इस मदद की ज़रूरत थी, और यीशु ने उनके लिए रास्ता बताया। ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है। यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6